नये व पुराने नियम से बाइबल की कहानियां तथा उनसे संबंधित उद्धरण सहित मसीही सिद्धान्त

प्राचीन काल के पूर्वजों के युग की ऐतिहासिक घटनाएं व उन्हीं के समान बाद में घटने वाली घटनाएं तथा उनसे संबंधित सिद्धान्तः

सृष्टि निर्माण इससे संबंधित बाइबल सिध्दान्तः परमेश्वर द्वारा नई सृष्टि का निर्माण, नया जन्म व पुनर्जन्म

पुराना नियमः परमेश्वर ने भौतिक अस्थाई संसार की रचना की, उत्पत्ति 1-2 अध्याय

नया नियमः परमेश्वर ने नई सृष्टि निर्माण का कार्य आरम्भ किया जो आत्मिक, अनन्त व पापरहित है। प्रभु यीशु के पुनरूत्थान में सहभागी होने पर विश्वासी नई-सृष्टि बनता है। मत्ती 28

- नए आकाश और नई पृथ्वी बन जाने पर यह पूरा होगा जिसकी हमें प्रतीक्षा है। प्रकाशितवाक्य 21-22
- हम आत्मिक रूप से इसमें नया-जन्म प्राप्त कर चुके हैं यीशु व नीकुदेमुस। यूहन्ना 3:1-7

हमारा प्रत्युत्तरः परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने पुरानी सृष्टि में हमारे लिये अनेकों भली वस्तु रची हैं।

- आनन्द से ललकारें कि हम यीशु के, जो कि नई सृष्टि का पहला फल है, पुनरूत्थान में सहभागी होने से परमेश्वर की नई, आत्मिक व अनन्त सृष्टि में प्रवेश करते हैं, 1 कुरि0 15, 2 कुरि0 5:17। इसके अतिरिक्त दूसरा मार्ग नहीं है, यूहन्ना 14:6,।

परीक्षा (मूल पाप, मृत्यु, आदम, शैतान, यीशु की मृत्यु और शैतान को हराना आदि से संबंधित)

पुराना नियमः प्रथम आदम शैतान के वश में हो गया था और आज्ञा उल्लंघन कर बैठा, और मानवजाति पर मृत्यु व पवित्र परमेश्वर से मानव की पृथकता लाया(आदम का आज्ञाउल्लंघन मूलपाप कहलाता है)। उत्पत्ति अध याय 3

नया नियमः अंतिम आदम यीशु, मानवजाति पर परमेश्वर से मेल-मिलाप, जीवन व शान्ति लाया और शैतान को व उसकी परीक्षाओं को धिक्कार दिया तथा विजयी हुआ।

- यीशु ने जो अंतिम आदम (1 कुरि 15:45) कहलाता है, शैतान की परीक्षाओं का सामना किया। (देखें मत्ती अध्याय 4) यीशु हम में निवास करने के द्वारा हमें इस योग्य बनाता है कि हम शैतान का सामना करके परीक्षाओं पर व संसार पर विजय पा सकते हैं।(यूहन्ना अध्याय 16-17)।
- यीशु ने गेतसेमनी में व अपनी मृत्यु तक अपने पिता की आज्ञा का पालन किया (एक महा-परीक्षा का समय) देखो मत्ती 26:36 से 42 पद।

हमारा प्रत्युत्तरः परमेश्वर के सम्मुख पापों का अंगीकार कर पश्चाताप करना (1 यूहन्ना 1:8-10)

- शैतान का सामना करें। पवित्रात्मा की सामर्थ में परमेश्वर के हथियारों का प्रयोग करें।(याकूब 4:7, इफि 6)

कैन व हाबिल (लहू के बलिदान, ख्रीस्त के लहू से संबंधित)

पुराना नियमः पुराने नियम में परमेश्वर की आराधना में निर्दोष यज्ञपशु का रक्त का होना आवश्यक थाः

- प्रथम हत्यारे कैन का रक्तरहित बलिदान जब अस्वीकार हो गया और उसके भाई हाबिल का रक्तपूर्ण बलिदान स्वीकृत हुआ तो उसने अपने भाई हाबिल का घात कर दिया। (उत्पत्ति अध्याय 4)
- महापुरोहित के उन पुत्रों को परमेश्वर ने मार डाला जिन्होंने बिना रक्त के उसके निकट प्रवेश किया था। (लैव्य0 10 अध्याय)

नया नियमः नये नियम की आराधना में यीशु का रक्त सम्मिलित होता है जो परमेश्वर का अनन्त मेम्ना है

- यीशु ने यहूदियों को यह कहकर अचम्भित कर दिया कि उनकी देह खाने की व लहू पीने की वस्तु है और जब तक इन्हें न खाया-पिया जाए तो जीवन प्राप्त नहीं होगा।(यूहन्ना 6:26-59)
- सामरी स्त्री से यीशु ने कहा कि हमें आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करना चाहिये।(यूहन्ना 4)

हमारा प्रत्युत्तर: हमें परमेश्वर की आराधना सच्चे हृदय से यह याद करते हुए करना चाहिये कि प्रभु यीशु ने हमारे पापों के बदले में रक्त बलिदान दिया है। (मत्ती 26:26-28)।

- जैसा प्रभु चाहता है उसी के अनुसार प्रभु-भोज में संभागी होना चाहिये। (1 कुरि 10:16-17, 11:27-32)
- हम अपने होठों से परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं, पर यदि उसके प्रति आज्ञाकारी नहीं तो हमारी आराधना व्यर्थ है। (मत्ती 15:6-9)

नूह: (जल-प्रलय,पश्चात्ताप,दंड,न्याय,दूसरी मृत्यु, आदि के संबंध में)

पुराना नियम: परमेश्वर ने दुष्ट मानवजाति को दंड देने के लिये शारीरिक मृत्यु व जल-प्रलय भेजा। (उत 6-9)

नया नियम: यदि हम पश्चात्ताप न करें तो परमेश्वर दूसरी मृत्यु की चेतावनी देता है जो अनन्त काल तक के लिये नरक में रहना व परमेश्वर की उपस्थिति से सदा तक का अलगाव है।

- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने पश्चाताप की पुकार लगाई कि लोग आने वाले प्रतिज्ञात मसीह को स्वीकार करने की तैयारी करें (मत्ती अध्याय 3)
- परमेश्वर उन्हें जो पश्चात्ताप नहीं करते, आग की झील में डालकर दंड देगा। (यही अंतिम न्याय व दूसरी मृत्यु कहलाती है।) (प्रकाशितवाक्य 20:11-15)

हमारा प्रत्युत्तर: काशकि हमारे स्वर्गिय पिता परमेश्वर की कृपा हमें मन-फिराव के लिये उभारे। (रोमियों 2:4)

- हमें अपने पापों से मन-फिराकर प्रभु यीशु पर विश्वास लाना चाहिये । (मरकुस 1:15)

बाबेल: (जातियों, संस्कृतियों व भाषाओं के संबंध में)

पुराना नियम: जब लोग बाबेल के गुम्मट का निर्माण कर रहे थे तब परमेश्वर ने विभिन्न जातियों व संस्कृतियों की उत्पत्ति की :

- मनुष्य एक ही घमण्डी समाज में संयुक्त होकर रहना चाहता था, पर परमेश्वर ने उन्हें विभिन्न भाषाओं में बांट दिया। (देखें उत्पत्ति अध्याय 11)

नया नियम: परमेश्वर के अनन्त महिमायुक्त सिंहासन के सम्मुख हर जाति व संस्कृति के लोग एकत्रित होकर उसकी स्तुति करेंगे । (प्रकाशितवाक्य 7:9-17)।

हमारा प्रत्युत्तर: मनुष्य की राजनैतिक शासकीय शक्ति पर नहीं परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर भरोसा करना चाहिये (जकर्याह 4:6)

- जिन विभिन्न संस्कृतियों व जातियों का स्वर्ग में आदर किया जाता है, आप भी कीजिये। परमेश्वर द्वारा दी गई ये विभिन्नताएं ख्रीस्त की दुल्हन की शोभा बढ़ाती हैं, वहां हर जाति, कुल व भाषा की बड़ी भीड़ होगी। (प्रकाशितवाक्य 7:9-12)
- हर जाति के लोगों को चेला बनाओ (चाहे वे किसी भी जाति व संस्कृति के हों) (देखें मत्ती 28:18-20)

अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा (प्रतिज्ञा, विश्वास एवं वाचा के संबंध में)

पुराना नियम : परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह विश्वासी अब्राहम के वंशज द्वारा समस्त जातियों को आशीष देगा:

- अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह विश्वास ही उसके लिये धार्मिकता गिना गया। अब्राहम के वंशज द्वारा ही आशीष देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की तथा एक गंभीर वाचा के साथ इसे पक्का किया। (देखें उत्पत्ति 12:1-7 तथा 15 अध्याय)
- परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह अब्राहम को पुत्र देगा, अदभुद रीति से यह पुत्र उसे मिला, अब्राहम विश्वास में स्थिर रहा। (देखें उत्पत्ति 15:1-6)

नया नियम: समस्त जातियों को आशीष देने की अब्राहम से की गई अपनी प्रतिज्ञा को परमेश्वर अब्राहम के वंशज प्रभु यीशु के द्वारा पूरी करता है क्योकि यीशु पाप और दंड से बचाता है:

- मरियम ने अदभूत रीति से पुत्र को और अपने उद्धारकर्ता को जन्म देना स्वीकार किया। लूका 1:26-56
- यीशु ने दुष्टात्माग्रस्त मनुष्य तथा बहुतेरों को स्वस्थ किया क्योंकि उन्होंने विश्वास किया। मरकुस 1:21-34
- यीशु ने झोले के मारे को चंगा किया क्योंकि उसके मित्रों में विश्वास था। मरकुस 2:1-12
- पिन्तेकुस्त के दिन हर देश के विश्वासी यहुदियों पर पवित्रात्मा उंडेला गया। प्रेरि अध्याय 2
- परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी पवित्रात्मा दिया कि सब लोग उद्धार पाएं। प्रेरि 10:44-48

हमारा प्रत्युत्तर: अपने प्रयत्न से नहीं पर प्रभु के अनुग्रह से विश्वास द्वारा क्षमादान पाएं। इफि 2:8-10

- हम अब्राहम के उत्तराधिकारी हैं। उसके समान विश्वास द्वारा आशीष पाते हैं। गलातियों 3:6-12, 4:21-31
- हम पवित्रात्मा की सामर्थ से सब जगह यीशु की साक्षी देते हैं। प्रेरि0 1:8
- हम यीशु के नाम में शारीरिक चंगाई के लिये प्रार्थना करते हैं। याकूब 5:14-16
- हमारी असफलता में परमेश्वर अन्य प्रकार का अनुग्रह दे। जैसा पौलुस को दिया। 2 कुरि12:7-10 (परमेश्वर सभी को चंगा नहीं कर देता, अथवा सभी कोई मर कर यीशु के समान नहीं जी उठते आदि)

अब्राहम का विश्वास (विश्वास,इस्लाम,इज़हाक के संबंध में)

पुराना नियम: अब्राहम का विश्वास हमें भले कार्य करना और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करना सिखाता है, यह नये व पुराने दोनों नियमों की मुख्य बातें हैं :

- अब्राहम ने अपने स्वार्थी भतीजे लूत को हरी चारागाह चुनने का अवसर पहले दिया। (उत्पत्ति अध्याय 13)
- अब्राहम ने विश्वास से अपने कुछ दासों के साथ लूत को बचाने के लिये पांच राजाओं से युध्द किया। (उत 14)
- अब्राहम के विश्वास से इज़हाक का जन्म हुआ जिससे परमेश्वर ने अनुग्रह की वाचा बांधी।(उत 21)
- परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास को उसके पुत्र के बलिदान के द्वारा परखा जो उसकी वाचा का एकमात्र उत्तराधिकारी था। (उत्पत्ति अध्याय 22)
- अपने विश्वास की क्षणिक निर्बलता में अब्राहम ने अपने प्रयास से परमेश्वर के अनुग्रह की वाचा को पूर्ण करने का प्रयत्न किया (उत्पत्ति 16-17 अध्याय) इसका परिणाम यह हुआ कि हाजिरा से उत्पन्न उसकी अवैध सन्तान इश्माएल के वंशज अरब मुस्लिम लोग आज तक अब्राहम की वैवाहिक संतानों से जो सारा से हुई, झगड़ती हैं ।

नया नियम: प्रभु यीशु हमसे नया-जन्म, चंगाई, तथा अन्य आशीषें प्राप्त करने के लिये विश्वास की मांग करता है:

- नीकुदेमुस को उन्होंने समझाया कि विश्वास से पवित्रात्मा नया जन्म देता है। (यूहन्ना अध्याय 3)
- विश्वास करने वाले सूबेदार के दास को यीशु ने चंगा किया। (मत्ती 8:5-17)
- यीशु ने विश्वास के कारण दो अंधों को चंगा किया। (मत्ती 9:27-38)

हमारा प्रत्युत्तर: हमारा विश्वास द्वारा उद्धार प्राप्त करना हमें भले कार्य करने को कहता है, यदि ऐसा न हो तो हमारा विश्वास सच्चा नहीं होगा। (इफिसियों 2:8-10, याकूब 1:22-24)

- संदेहों को दूर कीजिये जैसे अब्राहम ने अपने ही प्रयत्न से अनुग्रह की वाचा को पूरा करने का प्रयास किया, आप अपने प्रयास न करें, उद्धार अनुग्रह से होता है, भले कार्यो से नहीं। अब्राहम के पुत्र इश्माएल से अरब के वंशज निकले जिनसे इस्लाम बना जो आज सबसे अधिक नियमानुसार चलने वाले लोग कहलाते हैं (गलातियों 3:6-12 तथा 4:21-31)
- प्रतिदिन नये बनते जाएं, नित्य वचन पढ़ें व प्रार्थना करें, पवित्रात्मा हमें प्रतिदिन नया बनाता रहे। (2 कुरि 4:16)।

अब्राहम का भंडारीपन (देने के संबंध में)

पुराना नियम: पुराने नियम में परमेश्वर ने उन लोगों को प्रतिफल दिया जो अपने उत्तरदायित्वों में अच्छे भंडारी रहे:

- अब्राहम ने उस सारी वस्तुओं का जिन्हें उसने आक्रमणकारियों से लूटा था, मलिकिसिदक को जो ख्रीस्त के समान महायाजक था, दशमांश भेंट चढ़ाया। (उत्पत्ति 14:11-24)
- बोअज़ ने फसल काटने वाले अपने दासों को आज्ञा दी कि वे सारी फसल न बटोर लें पर कुछ कुछ फसल बाकी छोड़ते भी जाएं ताकि रूत जैसी निर्धन महिला फसल अपने लिये बटोर सके। (रूत की पुस्तक अध्याय 2)

नया नियम: जो लोग हर्ष से प्रभु की सेवा के लिये दान देते और आवश्यकताग्रस्त लोगों की सहायता करते हैं, उनके लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है:

- निर्धन विधवा ने ऐसी स्थिति में दिया जबकि उसे स्वयं दमड़ियों की आवश्यकता थी। (लूका 21:1-4)
- बरनाबास ने अपनी भूमि बेचकर आवश्यकताग्रस्त लोगों के लिये धन दिया। (प्रेरि0 4:33-37)
- नेक-सामरी ने अपने शत्रु की सेवा की। (लूका 10:25-37)
- प्रभु यीशु ने विश्वासयोग्य भंडारी के विषय में दृष्टान्त दिया व अच्छे भंडारीपन की शिक्षा दी। (लूका 19:11-27)
- यीशु ने दुष्टतापूर्ण भंडारीपन को भी दृष्टान्त देकर समझाया। (लूका 16:1-8)

हमारा प्रत्युत्तर: जो कुछ परमेश्वर ने हमें दिया है, वह चाहे धन-संपत्ति हो या कोई वस्तु हो, विश्वासयोग्य भंडारी की भांति उसका संरक्षण करना चाहिये। (1 कुरिन्थियों 4:2)

- परमेश्वर नहीं चाहता कि हम कुढ़कुढ़ाकर दें, हर्ष से देना चाहिये। (2 कुरि 9:6-15)

अब्राहम की परहित की प्रार्थना: (विश्वास,मध्यस्थता, चंगाई के संबंध में:)

पुराना नियम: पुराने नियम में परमेश्वर ने विश्वासपूर्ण प्रार्थना का उत्तर दिया:

- लूत (सदोम-अमोरा) के संबंध में अब्राहम की प्रभावपूर्ण प्रार्थना (उत्पत्ति 18-19 अध्याय)
- मंदिर के समर्पण के समय राजा सुलैमान व उसकी प्रजा की प्रभावपूर्ण प्रार्थना। (2 इतिहास 6, 7:1-4)
- एज्रा द्वारा लोगों के बदले पापांगीकार की प्रार्थना जिसका परिणाम आत्म-जागृति हुआ। (एज्रा 9, 10:1-19)

नया नियम: परमेश्वर हमारी विश्वासपूर्ण प्रार्थना का उत्तर देता है :

- पतरस और यूहन्ना ने यीशु के नाम से प्रार्थना करके जन्म के लंगड़े को अच्छा किया। इसके कारण उन्हें जेल में भी रहना पड़ा (प्रेरि अध्याय 3 व 4)।

- एक पिता की दृढ़ विश्वास प्राप्ती के लिये व पुत्र की चंगाई के लिये प्रार्थना। (मरकुस 9:14-29)।
- चुंगी लेने वाले की संक्षिप्त प्रार्थना (लूका 18:9-14)
- यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया कि हमें कैसे प्रार्थना करना चाहिये। (मत्ती 6:1-15)
- यीशु ने हमारे लिये और अपने प्रेरितों के लिये प्रार्थना की। (यूहन्ना अध्याय 17)
- हमारे लिये प्राण बलिदान करने के लिये यीशु ने प्रार्थना में स्वयं को पिता के अधीन किया। (मत्ती 26:36-44)

हमारा प्रत्युत्तर: यीशु ने कहा कि हमें उसके नाम से प्रार्थना करना चाहिये ताकि हमारा आनन्द पूरा हो जाए।(यूहन्ना 16:24)।

- पौलुस प्रेरित ने कहा कि हमें निरंतर प्रार्थना करना चाहिये । (1 थिस्स0 5:17)
- यूहन्ना प्रेरित ने कहा कि हम परमेश्वर के संमुख अपने पापों को मान लें। (1 यूहन्ना 1:8-10)

इसहाक की दुल्हन रिबका: (इसहाक, पिन्तेकुस्त, पवित्रात्मा आदि के संबंध में)

पुराना नियम: अब्राहम अपने पुत्र इसहाक के लिये दुल्हन (रिबका) की खोजबीन के लिये अपने दास को दूर देश भेजता है।(पढ़ें उत्पत्ति अध्याय 24)।

नया नियम: परमेश्वर अपने पुत्र यीशु के लिये विश्वासी दुल्हन (कलीसिया) की खोजबीन के लिये पवित्रात्मा को भेजता है:

- यीशु ने सहायक भेजने की प्रतीज्ञा की, जो हमें पाप के विषय कायल करता, और ख्रीस्त को हम पर प्रकट करता है। (यूहन्ना 14:15-26 तथा 16:7-16)
- पिन्तेकुस्त के दिन पवित्रात्मा उतरा और यहूदियों के मध्य प्रथम कलीसिया का आरम्भ हुआ। (प्रेरि0 अध्याय 2)
- अन्यजातियों पर भी पवित्रात्मा उतरा, कुरनेलियुस के घर में, प्रथम अन्यजाति कलीसिया आरम्भ हुई।(प्रेरि 10)

हमारा प्रत्युत्तर: ऐसे विश्वासियों से संपर्क कीजिए जो प्रभु यीशु की दुल्हन बनने अर्थात् उसके विश्वासी लोग कहलाने के लिए चुने गए हैं, चाहे वे कितनी ही दूर क्यों न रहते हों।(मत्ती 28:19-20)।

याकूब पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ: (याकूब, एसाव, विश्वास, विश्वास द्वारा उद्धार के संबंध में)

पुराना नियम: सर्वशक्तिमान परमेश्वर जिन्हें चुन लेता है, उन पर अनुग्रह भी करता है। ऐसा उनके भले कार्यो के आधार पर नहीं होता पर उसके अनुग्रह ही से होता है।

- हालांकि याकूब ने अपने भाई एसाव को धोखा दिया, तो भी आशीषें पाता है। (उत्पत्ति अध्याय 27-33)
- व्यवस्था आने से पूर्व यह सारी लम्बी कहानी हमें प्राचीन इब्रानी संस्कृति का ज्ञान कराती है।
- याकूब छल से पहलौठे का हक एसाव से ले लेता है। (उत्पत्ति अध्याय 27)।
- याकूब ने सीढ़ी का दर्शन देखा व परमेश्वर की आराधना की, याकूब से बातें करते हुए परमेश्वर ने अब्राहम से बांधी गई अपनी वाचा को दोहराया। (उत्पत्ति अध्याय 28)।
- परमेश्वर ने याकूब को उसके छल का दंड दिया - लाबान ने उससे छल किया। (उत्पत्ति अध्याय 29)।
- हालांकि याकूब पूर्णत: धर्मी नहीं था तो भी उसने आशीष के रूप में धन-संपत्ति व संतानें पाई।(उत0 30 अध्याय)
- परमेश्वर ने लाबान और एसाव के क्रोध से उसे बचाया, वह परमेश्वर के दूत से लड़ा।(उत0 31-33 अध्याय)।

नया नियम: प्रभु यीशु बुरे लोगों को उनके अच्छे कार्यों के कारण नहीं, पर उनके विश्वास के कारण क्षमा करता व आशीष देता है।

- पापिन स्त्री को यीशु क्षमादान देते हैं। (लूका 7:36-50)
- यीशु ने दुष्टान्त से समझाया कि परमेश्वर अच्छे-बुरे सभों को अपने भोज में निमंत्रण देता है।(मत्ती 22:1-10)
- जिन पापियों को बचाने यीशु जगत में आया उनके साथ खाया-पिया, उनकी आलोचना हुई। (लूका 5:27-32)

हमारा प्रत्युत्तर: परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हमें हमारे कार्यो के आधार पर क्षमादान नहीं दिया, पर हमारे विश्वास के कारण क्षमा किया है। (रोमियों 8:28-30 तथा 9:10-18)

- अच्छे बुरे सब लोगों को सुसमाचार सुनाओ क्योकि प्रभु यीशु खोए हुओं को ढूढ़ने व उनका उद्धार करने आया था। (लूका 5:32)।

युसुफ़ ने क्षमा किया: (क्षमा, परहित-प्रार्थना, हमारा सहायक यीशु, आदि से संबंधित बातें)

पुराना नियम: युसुफ़ अपने उन भाईयों के लिये सहायक बनता है जिन्होंने उसके साथ बुरा किया था :

- युसुफ़ जब अधिकार में था तब फिरौन से अपने उन भाईयों के विषय में कृपा करने का निवेदन करता है जिन्होंने एक समय उसे दास के रूप में व्यापारियों के हाथ बेच दिया था। (उत्पत्ति 37 व 39-45 अध्याय)।
- आप संक्षिप्त रूप से विभिन्न भागों में यह विस्तृत कथा स्मरण रख सकते हैं। इस कथा में क्षमा करने, पवित्र रहने, पारिवारिक कलह, परहित-निवेदन, परमेश्वर का प्रबन्ध आदि अनेक विषयों पर शिक्षाएं मिलती हैं । युसुफ़, प्रभु यीशु की पूर्व-छाया कहा जा सकता है क्योंकि वह :

एक चरवाहा था, अपने पिता का प्रिय पुत्र था, अपने भाईयों अर्थात् इस्राएल के पुत्रों द्वारा बेचा गया, परीक्षा में विजयी रहा, अन्याय सहकर जेल में वह रहा, किन्तु बाद में आदर के साथ वह राजा के दाहिने हाथ बैठा, अपने भाईयों के लिये राजा से उसने निवेदन किया, एक शानदार भोज में अपने भाईयों से वह गले मिला।

नया नियम: हालांकि हम दुर्बल हैं, हमने उसकी दृष्टि में पाप किया है, तो भी यीशु पिता के सामने हमारे सहायक के रूप में हमारे लिये निवेदन करते हैं :

- यीशु अच्छा चरवाहा हैं जो खोई हुई भेड़ को ढूंढ़ते हैं। (लूका 15:1-10)
- यीशु ने उन लोगों के लिये पिता से प्रार्थना की जिन्होंने उनको क्रूस पर चढ़ाया था। (लूका अध्याय 23)
- यीशु ने कारण बताया कि क्यों हमें दूसरों को क्षमा करना चाहिये। (मत्ती 18:15-35)

हमारा प्रत्युत्तर: प्रभु यीशु के नाम में प्रार्थना करें क्योंकि वह पिता के पास हमारा सहायक है, जो हमारे लिये प्रार्थना करता है। (यूहन्ना 16:24, रोमियों 8:33-39)।

- जो हमारे प्रति अपराध करते हैं, उन्हें क्षमा करें। (मत्ती 6:14-15, इफिसियों 4:32)

मूसा के युग की घटनाएं, जिसने इस्राएल को परमेश्वर की व्यवस्था दी, तथा उसके पश्चात् उन्हीं के समान घटने वाली घटनाएं :

छुटकारा देने वाले मूसा को परमेश्वर ने नियुक्त किया (स्वतन्त्र करना, पाप, उद्धार, प्रभु-भोज, यूखारिस्त, प्रभु की मेज़ संबंधी बातें):

पुराना नियम: परमेश्वर ने अपने लोगों की अगुवाई के लिये एक छुटकारा देने वाले का प्रबन्ध किया जिसने मिस्र के दासत्व से उन्हें छुड़ाया और उन्हें एक नई व पवित्र जाति बनाया।

- मूसा के जन्म के समय अद्भूत बातें हुई, उसे मार डालने का प्रयत्न किया गया। (निर्गमन 1 व 2 अध्याय)।

- मिद्यान में उसका प्रशिक्षण हुआ ताकि वह लोगों का नेतृत्व करने योग्य बन सके, जलती-झाड़ी के समय उसकी बुलाहट हुई और वह मिस्र लौटा तथा इस्राएलियों को स्वतन्त्र कराया, उसे परमेश्वर ने यह सब करने की सामर्थ प्रदान की। (निर्गमन 2-4 अध्याय)।
- जल को लहू बना देना उसका पहला आश्चर्यकर्म था। यह मिस्र के झूठे देवी-देवताओं पर श्राप था। (निर्गमन 7:13-25)।

नया नियम: परमेश्वर ने अपने लोगों के लिये एक उद्धारकर्ता (प्रभु यीशु) को ठहराया कि वे पाप के दासत्व से छुड़ाए जाएं।

- उस उद्धारकर्ता (प्रभु यीशु) के जन्म के समय अद्‌भूत घटनाएं हुई और उसे घात करने का प्रयत्न किया गया।(मत्ती 1:18-25, तथा अध्याय 2)।
- यीशु की तैयारी और उनका बपतिस्मा, पिता परमेश्वर द्वारा घोषणा कि वे उसके प्रिय पुत्र हैं। (मत्ती 3:13-17)
- यीशु का पहला आश्चर्यकर्म जल को दाखरस बनाना अर्थात् आशीषें। (यूहन्ना अध्याय 2)।

हमारा प्रत्युत्तर: अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु पर पूर्ण विश्वास व भरोसा रखना ताकि हमें पापों की क्षमा का आनन्द व परमेश्वर की आशीषें प्राप्त हो सकें। (यूहन्ना 3:16)।

फसह का मेम्नाः (यूखारिस्त, प्रभु की मेज़, मेम्ने का रक्त, रक्त, बलिदान, पुनरूत्थान आदि से संबंधित बातें)।

पुराना नियम: परमेश्वर ने इस्राएल जाति के लिए अखमीरी रोटी का वार्षिक पर्व (फसह) मनाने की आज्ञा ठहराई। पढ़ें निर्गमन अध्याय 12 तथा निम्न बातों पर ध्यान दीजिए :

- यह पर्व लोगों को युगों तक याद दिलाता रहेगा कि कैसे परमेश्वर ने उन्हें मिस्र के दासत्व से छुड़ाया था।
- मौत के स्वर्गदूत ने जिन विश्वासी घरों की चौखटों पर लहू लगा देखा उन्हें छोड़ दिया।

नया नियम : यीशु ने अपने लहू में नई वाचा को पक्का करने के लिये प्रभु भोज को स्थापित किया (लूका 22)।

- हम प्रभु भोज को इसलिए मनाते है ताकि हम युगों तक यह स्मरण रख सकें कि यीशु ने किस प्रकार से अपना पवित्र रक्त बहाकर हमें पापों के दासत्व से छुड़ाया।

हमारा प्रत्युत्तर: जब हम नये फसह पर्व को मनाते हैं तो हम प्रभु यीशु की देह व रक्त में सहभागी होते हैं।(1 कुरिन्थियों 10:16-17)

दासत्व से छुटकाराः (संबंधित बातें: दासत्व, पुनरूत्थान, अमरत्व, लाल सागर)

पुराना नियम: परमेश्वर ने लाल सागर के मध्य से निकालते हुए इस्राएल जाति को मिस्र के दासत्व से छुड़ाया। यह आश्चर्यकर्म पुरानी वाचा का एक मूल ऐतिहासिक आधार था। (निर्गमन अध्याय 12 व 13)

नया नियम: प्रभु यीशु अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा हमें पाप के दासत्व से मुक्त करता है। (लूका 24)

- यीशु हमें अनन्त जीवन प्रदान करता है क्योंकि एक विश्वासी उसके पुनरूत्थान में सहभागी है। (यूहन्ना 11)

हमारा प्रत्युत्तर: हम केवल ख्रीस्त में विश्वास रखते हैं कि वही जीवन का दाता है, और वही हमें अमरत्व देगा।(1 कुरिन्थियों अध्याय 15)

परमेश्वर ने जल और मन्ना दियाः (संबंधित विषय:जीवन-जल, अनन्त जीवन, मन्ना, अमरता,जीवन की रोटी)

पुराना नियम: परमेश्वर के आश्चर्यकर्मो के माध्यम से मूसा ने भोजन व जल उपलब्ध कराया :

- परमेश्वर ने स्वर्ग से मन्ना खिलाया (निर्गमन 17-1-7)

- परमेश्वर ने चट्टान से पानी पिलाया (गिनती 20:1-12)

नया नियम: यीशु एक विश्वासी को जीवन की रोटी (स्वयं अपना जीवन), और जीवन का जल (पवित्रात्मा) देता है:

- यीशु ने अद्‌भूत रीति से 5000 लोगों को भोजन कराया, फिर अनन्त जीवन पाने के लिये स्वर्गीय रोटी अपनी देह के रूप में दी जिससे अनेक यहूदियों को ठोकर लगी। (यूहन्ना अध्याय 6) ।
- यीशु ने हमारे अन्दर निवास करने व शान्ति देने के लिये पवित्रात्मा भेजने की प्रतिज्ञा की।(यूहन्ना 7:37-39, 14:15-26)।

हमारा प्रत्युत्तर: सच्ची स्वर्गीय रोटी की खोज करना चाहिए न कि भौतिक वस्तु की, और पवित्रात्मा पाना चाहिए।(मत्ती 6:31-34, यूहन्ना 20:21-23)

परमेश्वर ने अपने लोगों के लिये चरवाहों का प्रबन्ध किया: (संबंधित बातें: एल्डर्स, यित्रो)

पुराना नियम: परमेश्वर ने पुराने नियम में अपने लोगों की अगुवाई के लिये पुरनिए व चरवाहे नियुक्त किए।(निर्गमन 18:12-27)

नया नियम: परमेश्वर ने कलीसियाओं की देखभाल के लिये बुजुर्गो व पास्टरों को नियुक्त किया है। (देखें प्रेरितों के काम अध्याय 14 विशेषकर पद 23 पर ध्यान दें)।

हमारा प्रत्युत्तर: कलीसिया के संस्थापक नये क्षेत्रों में बुजुर्गों को नियुक्त करते हैं जहां अनुभवी अगुवों की कमी होती है । (तीतुस 1:5-9)।

- प्रभु की कलीसिया में जो अगुवे हमारी देखभाल करते हैं, उनकी आज्ञाओं का हम पालन करते हैं। (इब्रानियों 13:17)।

दस आज्ञाएं: (संबंधित विषय: पुरानी वाचा, नई वाचा, यीशु की आज्ञाएं, व्यवस्था)

पुराना नियम: परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को पत्थर की पाटियों पर खुदवाया, ये आज्ञाएं इस्राएल जाति के आचरण का आधार हैं। (देखें निर्गमन अध्याय 19-20, तथा 31:18)

- परमेश्वर ने नई वाचा की प्रतिज्ञा की - वह पत्थर पर नहीं, हृदयों पर लिखी होगी ।(देखें यिर्मयाह 31:31-34)
- जो भी कोई इन आज्ञाओं का उल्लंघन करता था, मृत्युदंड पाता था। (गिनती 25:1-11)

नया नियम: यीशु ने अपनी आज्ञाएं मानने का आग्रह किया जो नई वाचा में हमारे आचरण का आधार हैं।(देखें मत्ती 28:18-20)।

- यीशु चट्टान हैं, उनकी आज्ञा का पालन करने से ही हमारी नींव पक्की बन सकेगी। (मत्ती 7:24-29)
- प्रथम कलीसिया ने अपने प्रशासन में उनकी सारी आज्ञाओं का पालन किया। (प्रेरि 2:37-34)
- सबने पश्चात्ताप किया, विश्वास किया और पवित्रात्मा पाया। (मरकुस 1:15, यूहन्ना 3:16, 20:22)

उन्होंने बपतिस्मा लिया और नया जीवन पाया जो उनमें आरम्भ हुआ था। (मत्ती 28:18-20)

वे एक दूसरे से प्रेम रखते थे, जैसाकि उनके व्यवहार से प्रकट था, वे मिलजुलकर रहते, एक दूसरे की आवश्यकताओं की पूर्ति करते व एक दूसरे की चिन्ता किया करते थे। प्रेम में सब कुछ निहित होता है: परमेश्वर के प्रति हमारा कर्तव्य, पड़ौसी के प्रति हमारे कर्तव्य, हमारे सहकर्मी, आवश्यकताग्रस्त लोग, हमारे शत्रु, आदि।(मत्ती 22:36-40, यूहन्ना 13:34-35, लूका 10:25-37, मत्ती 5:43-48)

वे रोटी तोड़ते थे अर्थात् आराधना व संगति करते थे। (मत्ती 26:26-28, यूहन्ना 4:24)

वे प्रार्थना करते थे। (इसमें सब कुछ आता है जैसे: व्यक्तिगत प्रार्थना, पारिवारिक प्रार्थना, परहित-प्रार्थना, आत्मिक संघर्ष करना आदि) (यूहन्ना 16:24)

वे दिया करते थे। (इसमें समय का भंडारीपन, धन-संपत्ति देना, अपने वरदानों का उपयोग करना सम्मिलित है)

वे शिष्य बनाया करते थे। (इसमें ये बातें शामिल की जा सकती हैं : मसीह की गवाही देना,देखभाल करना, वचन की शिक्षा देना, अगुवों को प्रशिक्षित करना, मिशनरी भेजना आदि) मत्ती 28:18-20

- हमारे लिये यीशु की प्रमुख आज्ञा यह है कि हम परमेश्वर से और मनुष्यों से प्रेम करें, क्योंकि सारी व्यवस्था का सारांश इसी आज्ञा में पाया जाता है। (मत्ती 22:33-40)।
- यीशु ने फरीसियों को झिड़का जो परमेश्वर की आज्ञाओं से ज्यादा मनुष्यों की आज्ञाओं का पालन करते थे।(मरकुस 7:1-23, मत्ती अध्याय 23)

हमारा प्रत्युत्तर: अब हम पवित्रात्मा के चलाए चलते हैं जो हममें पवित्रता का फल उत्पन्न करता है। (रोमियों 8:3-16, गलातियों 5:14-26)।

- हम पुरानी मृत्यु की वाचा के विधि-विधानों को तजकर, जीवन व स्वतन्त्रता की नई वाचा पर चलते हैं।(2 कुरि0 3:3-18)
- पवित्रात्मा को अवसर दें कि वह हमें पापों के प्रति निरूत्तर करे। (यूहन्ना 16:5-15)।

सब्त का विश्राम: (संबंधित विषय: धर्म-विधिनुसार चलना, व्यवस्था)

पुराना नियम: परमेश्वर की पुरानी वाचा में एक विशेष दिन विश्राम व आराधना के लिये नियुक्त था।

- भौतिक जगत की सृष्टि रचना के पश्चात परमेश्वर ने विश्राम लिया था, इसी के कारण उसने सातवां दिन पवित्र ठहराया। (निर्गमन 20:8-11)
- परमेश्वर की आज्ञानुसार सब्त के दिन लकड़ी बीननेवाला व्यक्ति मार डाला गया। (गिनती 15:30-36)।

नया नियम: परमेश्वर की नई वाचा में भी एक विशेष आराधना का दिन नियुक्त है।

- एक नई व अनन्त सृष्टि की आशा में विश्वासी लोग सप्ताह के पहले दिन जिसमें यीशु जी उठा था, आराधना करते हैं। (प्रेरितों के काम 20:7)
- यीशु द्वारा नई वाचा की घोषणा की गई। (लूका 22:13-20)।

हमारा प्रत्युत्तर: हम नई वाचा के अनुसार चलते हैं। यह हमें मृत्यु दंड सुनाने वाली पुरानी वाचा से स्वतन्त्र करती है जिसका पालन करना हमारे लिये कठिन था। (2 कुरि0 3:6-9)

- हम प्राचीन धर्मविधियों को नहीं मानते जिसमें ख़तना, व विशेष दिन माने जाते थे।(गलातियों 4:8-10, 5:5-14)
- हम किसी भी दिन आराधना करने के लिये स्वतन्त्र हैं। (रोमियों 14:1-18)।

मूर्तिपूजा का दंड मिलना: (संबंधित विषय: सोने का बछड़ा, लालच)

पुराना नियम: जिन्होंने सोने के बछड़े की पूजा की, परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया। (निर्गमन अध्याय 32)

नया नियम: इस युग के अंत में परमेश्वर मूर्तिपूजकों को भारी विपत्ति से दंडित करेगा। (प्रकाशितवाक्य 9)

हमारा प्रत्युत्तर: मूर्तिपूजा चाहे किसी भी रूप में हो बचना चाहिये, लालच न करें यह भी मूर्तिपूजा के बराबर है। (1 कुरिन्थियों 10:14, कुलुस्सियों 3:5)।

अविश्वासी इस्राएली 40 वर्ष जंगलों में भटकते रहे: (संबंधित विषय: अनाज्ञाकारिता, प्रतिज्ञात देश, अग्रिप्पा)

पुराना नियम: परमेश्वर ने इस्राएलियों को प्रतिज्ञात देश की आशीषें देने का वचन दिया किन्तु वे अपने अविश्वास के कारण उन्हें प्राप्त न कर पाए।

- बारह भेदियों ने कनान की भलीभांति छानबीन की, पर वे भूमि पर अधिकार करने से डरे, और इस प्रकार चालीस वर्ष तक जंगलों में भटकते फिरे। (गिनती अध्याय 13 व 14)

नया नियम: पौलुस प्रेरित ने राजा अग्रिप्पा को उद्धार का संदेश सुनाया पर उसने विश्वास न किया। (प्रेरि0 26)

हमारा प्रत्युत्तर: जब तक परमेश्वर मिल सकता है, हम उसकी खोज करते हैं। (यशायाह 55:6-7) ।

वाचा का संदूक:(संबंधित बातें: वाचा का संदूक, पवित्रस्थान, पुरोहितों की सेवा, महायाजक, हमारा महायाजक यीशु(।

पुराना नियम: परमेश्वर ने मूसा को एक पवित्र-स्थान बनाने की आज्ञा दी ताकि वह अपने लोगों से भेंट कर सके।

- वाचा का संदूक व पुरोहितों के वस्त्र बनाने संबंधी कड़े निर्देश दिए गये।(निर्गमन 25-31 व 35-40 अध याय)।
- लैव्यवस्था की पूरी पुस्तक पुरोहितों के कार्यो व पवित्र-स्थान में बलिदानों को चढ़ाने के संबंध में जानकारी देती है।
- पवित्र-स्थान में तीन भाग थे, जिनका विवरण इस प्रकार है: (निर्गमन अध्याय 40)

प्रथम भाग: आराधकों के लिये बाहरी आंगन। होमबलि के लिये एक बेदी, पुरोहितों के लिये हाथ-पैर धोने की एक हौदी। (निर्गमन 38), यह वेदी प्रभु यीशु के क्रूस बलिदान की ओर संकेत करती है जिसके द्वारा पापों से अनन्त छुटकारा प्राप्त होता है और पशु बलिदान की आवश्यकता समाप्त हो जाती है (इब्रानियों 9-10 अध्याय)। हौदी की तुलना बपतिस्मा से की जा सकती है जिसके माध्यम से विश्वासी शु(ध्दबनकर नई वाचा का पुरोहित बन जाता है।

द्वितीय भाग : केवल पुरोहितों के लिये पवित्र-स्थान। यहां एक पवित्र मेज़ थी जिसपर भेंट की रोटियां रखी जाती थीं।(यह प्रभु भोज की ओर संकेत करता है)। एक सोने का दीपक था जो सदैव तेल से जलता रहता था (यह पवित्रात्मा की ओर संकेत करता है)। साथ ही एक धूप वेदी थी, (जो प्रार्थना की ओर संकेत करती है)।

तृतीय भाग: महापवित्र स्थान : इसमें केवल महायाजक ही वर्ष में एक बार प्रवेश कर सकता था। विशाल लाल परदा जो इसे अलग किए हुए था ख्रीस्त की देह की ओर संकेत करता है। इस पवित्र स्थान में सोने से मढ़ा हुआ वाचा का संदूक था, जिसपर पवित्र स्वर्गदूत व करूब बने थे। इसमें परमेश्वर की उपस्थिति रहा करती थी जिससे संकेत मिलता है कि परमेश्वर अपने लोगो में निवास करता है। यहां हम प्रभु यीशु का चित्र देखते हैं।

- मिलाप वाले तम्बू के आंगन में लोग अपने पापों की अस्थाई क्षमा के लिये बलिदान चढ़ाया करते थे। (निर्गमन 29:36-41)
- हारून के पुत्रों ने रक्त रहित अनुचित अग्नि लेकर महापवित्र स्थान में धूप चलाया। वे मारे गये। (लैव्य0 10)
- केवल महायाजक ही वर्ष में एक बार महापवित्र स्थान में जाकर लोगों के प्रायश्चित्त में लोहू चढ़ाता था।(लैव्य0 16)
- बाद में मिलापवाले तम्बू का स्थान सुलैमान के भव्य मंदिर ने ले लिया। (1 राजा अध्याय 5 व 6)।

नया नियम: हमारे महायाजक के रूप प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु, पुनरूत्थान एवं स्वर्गारोहण के द्वारा स्वर्ग में प्रवेश किया :

- प्रभु यीशु दु:ख उठाने, परीक्षाओं का सामना करने व अपने पवित्र मानवीय जीवन के द्वारा हमारा सिध्द महायाजक बना। (इब्रानियों 2:14-18)।
- यीशु सनातन काल तक जीवित है, उसने पुराने महायाजक के कार्यो व उससे संबंधित बलिदानों व सेवाओं का स्थान ले लिया। (इब्रानियों अध्याय 7-9)

हमारा प्रत्युत्तर: परमेश्वर के निकट पूरे विश्वास के साथ आएं अन्य विश्वासियों को प्रोत्साहित करें। (इब्रानियों 10)

सबसे प्रमुख आज्ञा: (संबंधित बातें : सन्तानें, विवाह)

पुराना नियम: परमेश्वर एक ही है। हमें संपूर्ण हृदय से उसे प्रेम करना चाहिये तथा अपने बच्चों को शिक्षा देनी चाहिये कि वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें। (व्यवस्था विवरण 6:1-9)

नया नियम: यीशु ने विवाह के संबंध में आज्ञा दी और बच्चों को आशीषित किया। (मत्ती 5:31-32, 19:13-15)

हमारा प्रत्युत्तर: पति को अपनी पत्नी से प्रेम करना चाहिये तथा पत्नी को पति के आधीन रहना चाहिये।(इफिसियों 5:21-33) ।

- पौलुस बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने का निर्देश देते हैं और माता-पिता को आज्ञा देते हैं कि वे विश्वास में अपने बच्चों को बढ़ाएं। (इफिसियों 6:1-4)।

जादू टोना वर्जित: (संबंधित बातें: आत्माएं, रहस्यमयी, यीशु दुष्टात्माओं पर विजयी, दुष्टात्माएं, शैतान का अंत)

पुराना नियम: परमेश्वर ने मूसा को तांत्रिकों, ओझाओं, मृतकों से संपर्क कराने वालों, भावी कहने वालों, प्रेतात्माओं से बात करने वालों आदि सबसे दूर रहने की आज्ञा दी (व्यवस्था विवरण 18:9-12)

- राजा शाऊल ने एन्दोर की भूत-सिध्दि करने वाली महिला से संपर्क किया, परमेश्वर ने उसको गद्धी से उतार दिया।(1 शामुएल 28:6-25, अध्याय 31)।

नया नियम: यीशु शैतान सहित सभी दुष्टात्माओं पर विजयी हुआ :

- गदरेनियों में एक मनुष्य में से, सुअरों में से, अन्य अनेकों मे से यीशु ने दुष्टात्माएं निकालीं। (मत्ती 8:28-34, 12:22-32)।
- अंतिम दिनों में यीशु शैतान को व उसके राज्य को सदैव के लिये नष्ट कर देगा। (प्रका0 12, 20:1-10)।

हमारा प्रत्युत्तर: सब प्रकार के ऐसे कामों से दूर रहें, दुष्टात्माग्रस्त मनुष्य के लिये यीशु के नाम में प्रार्थना करें।(गलातियों 5:19-21, लूका 10:9)।

अग्नि द्वारा जांच: (संबंधित बातें: स्वर्ग का धन, स्वर्ग)

पुराना नियम: परमेश्वर ने लूट का माल पवित्र डेरों में रखना वर्जित ठहराया। लूट का कीमती सामान अपने डेरों में छिपाने पर अग्नि द्वारा दंड दिया गया। (देखें गिनती अध्याय 31)

नया नियम: परमेश्वर ने चेतावनी दी कि हम निषिध्द वस्तुएं स्वर्ग में नहीं ले जा सकते हैं - अग्नि द्वारा हमारे कार्यो का परीक्षण होगा (1 कुरि0 3:10-15)

- धनवान मूर्ख के दृष्टान्त द्वारा यीशु ने चिताया कि धन से प्रेम करना व धन का लालच करना अनुचित है।लूका 12:14-31

हमारा प्रत्युत्तर: स्वर्ग पर अपना धन जमा करो, पृथ्वी पर नहीं। (मत्ती 6:19-21)

बालाम आशीषों में असन्तुष्ट (संबंधित बातें: बालाम, लालच, धन का लालच, भौतिकताबाद, धनी होना)

पुराना नियम: कुछ लोग परमेश्वर की सेवा में धन व्यय करते हैं और अन्य कुछ अपने स्वार्थ के लिये इसका प्रयोग करते व अधिक धन का लालच करते हैं:

- राजा बालाक ने इस्राएल को शाप देने के लिए बालाम को धन दिया। पर परमेश्वर ने एक गदही के द्वारा व अन्य उपायों से बालाक से इस्राएल के लिये आशीष के वचन कहलवाए। (गिनती 22-24 अध्याय)
- धनी नाबाल ने दाऊद के भूखे सिपाहीयों को अपने स्वार्थ के कारण मना कर दिया, परन्तु परमेश्वर ने स्थिति बदल दी। (1 शमूएल 25)
- राजा हिज्कियाह ने बाबेल के संदेशवाहकों को अपनी धन-संपत्ति व ऐश्वर्य दिखाया, उसका सब कुछ जाता रहा।(2 राजा 20:12-19)
- राजा सुलैमान के पास प्रचुर धन-संपत्ति, अनेक रानियां और मनोरंजन का हर साधन था, सब कुछ उसने व्यर्थ ही व्यर्थ पाया। (सभोपदेशक 2:1-11)

नया नियम : एक धनी व्यक्ति के दृष्टान्त द्वारा जो नरक में पहुंचाया गया, यीशु ने धन जमा करने की चेतावनी दी।(लूका 16:19-31)।

हमारा प्रत्युत्तर: जो विश्वास धनी हैं या धनी होना चाहते हैं, परमेश्वर की चेतावनी याद रखें कि इससे दु:ख बढ़ता है। (याकूब 5:1-6)

इस्राएल के न्यायियों के काल की मुख्य घटनाओं के साथ कुछ अन्य घटनाएं

यहोशु द्वारा प्रतिज्ञात देश पर अधिकार किया जाना: (संबंधित बातें: शुध्द, कलीसिया स्थापना, मिशनरी सेवा)

पुराना नियम: यहोशु ने परमेश्वर की सहायता से शत्रुओं पर विजय पाई व कनान पर अधिकार किया:

- परमेश्वर ने यहोशु को आज्ञा दी कि वह हियाब बांधकर दृढ़ हो जाए और प्रतिज्ञात देश से मूर्तिपूजकों को निकाल दे जिन्होंने वहां अधिपत्य जमा रखा है। (यहोशु 1:1-11)
- अन्यजाति नगर यरीहो का पतन। (यहोशु अध्याय 6)
- परमेश्वर ने यहोशु की सेना को एक विश्वासघाती द्वारा मूर्तिपूजा का पाप करने के कारण अस्थाई असफलता दी।(यहोशु 7-8 अध्याय)।
- कनान पर अधिकार करने के लिये यहोशु कुछ शक्तिशाली राजाओं को परास्त करता है। (यहोशु अध्याय 9-11)

नया नियम: प्रेरितों ने भी जब अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाया, तो परमेश्वर की सहायता से शैतान को हराया और विजयी हुए :

- अंताकिया की कलीसिया ने लंबे समय तक कार्य करने वाले पहले मिशनरी भेजे। (प्रेरि0 13:1-3)
- पौलुस और बरनाबास लंबी मिशनरी यात्राओं पर दूर देशों में व विभिन्न संस्कृतियों में गए।(प्रेरितों के काम 13-14, 16-21 अध्याय)।
- पौलुस ने नास्तिक शासक फेस्तुस व अग्रिप्पा तथा यहूदी अगुवों को यीशु का सुसमाचार सुनाया, उसे जेल में भी रहना पड़ा था। (प्रेरितों के काम अध्याय 20-26)।

हमारा प्रत्युत्तर: प्रभु ने जो प्रेरित आपके झुण्ड में दिए हैं उन्हें अछुते क्षेत्रों में भेजें। (इफिसियों 4:11-12, प्रेरितों के काम 1:8)।

- आज मिशनरी जबकि संपूर्ण संसार में परमेश्वर के राज्य को फैला रहे हैं तो शत्रु शैतान पीठ दिखा भाग रहा है। (प्रकाशितवाक्य 15:4)
- साहस के साथ प्रभु के शत्रुओं का सामना करना चाहिए और जो दु:ख आते हैं सहन करें। (मत्ती 10:16-42)

इस्राएल के परमेश्वर द्वारा अन्यजातियों ने आशीष पाई : (संबंधित बातें: राहब, परदेशी परमेश्वर के देश में लाए गए, ख्रीस्त की कलीसिया में सभी जातियां सम्मिलित हुई)।

पुराना नियम: पुराने नियम में परमेश्वर ने विश्वासयोग्य परदेशियों को अपने लोग इस्राएल के घराने में मिलाया:

- कनानी वेश्या राहब ने विश्वास से परमेश्वर के भेदियों को छिपाया, उसका प्राण बचाया गया।(यहोशु 2, 6:17)
- मोआबी विधवा रूत अपनी सास नाओमी के प्रेम के कारण इस्राएल आई और परमेश्वर पर विश्वास किया। रूत और राहेब दोनों ही ख्रीस्त की वंशावली में सम्मिलित हुई। रूत दाऊद की परदादी थी। रूत की पुस्तक एक अति रोचक प्रेम कहानी है।
- असीरिया के सेनापति नामान कोढ़ी ने अपने घमण्ड को चूर करके यरदन में गोते लगाए, उसे चंगाई मिली। (2 राजा अध्याय 5)।

नया नियम: ख्रीस्त की कलीसिया में सब जातियों का स्वागत होता है:

- सूर-सैदा प्रदेश की स्त्री के विश्वास को यीशु ने परखा और प्रतिफल दिया। (मत्ती 15:21-28)
- रोमी सूबेदार के विश्वास के कारण यीशु उसके दास को चंगा करते हैं। (लूका 7:1-10)
- पौलुस प्रेरित ने अनेकों जातियों में मिशनरी यात्राएं कीं। (प्रेरि 13-14, 17-18 अध्याय)।

हमारा प्रत्युत्तर: यीशु की आज्ञा है, सब जातियों में सुसमाचार का प्रचार करो, व उन्हें चेला बनाओ।(मत्ती 28:18-20, लूका 24:46-48)।

गिदोन ने दुर्बलता में सामर्थ पाई: (संबंधित बातें: गिदोन, दाऊद द्वारा गोलियत का मारा जाना, पतरस का अस्वीकरण, आत्मिक युध्द)

पुराना नियम: परमेश्वर ने पुराने नियम में बलवानों को पराजित करने के लिये निर्बलों का उपयोग किया :

- गिदान ने परमेश्वर के निराले निर्देशों का पालन करते हुए 300 सिपाहियों के साथ विशाल सेना को परास्त किया।(न्यायियों 6 व 7 अध्याय)।
- छोटे बालक गड़रिये दाऊद ने पलिश्ती वीर गोलियत को परास्त किया। (1 शमूएल अध्याय 17)

नया नियम: नये नियम में परमेश्वर ने दुर्बल व दोषी लोगों को महान कार्यो के लिये चुना:

- हलॉकि पतरस ने यीशु का इंकार किया था तो भी पवित्रात्मा पाने के बाद परमेश्वर ने उसे सामर्थ के साथ प्रयुक्त किया। (मत्ती 26:31-35, 69-75)

हमारा प्रत्युत्तर: परमेश्वर के संम्मुख अपनी दुर्बलताओं व अपराधों का अंगीकार करें।

- मानवीय धन व ज्ञान पर नहीं परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य व ज्ञान पर भरोसा रखना चाहिये।(1 कुरि 1-2)
- पौलुस के समान प्रार्थना करें जिसने कहा मैं ख्रीस्त की सामर्थ में सब कुछ कर सकता हूं। (फिलि 4:13)
- परमेश्वर के आत्मिक हथियारों के साथ आत्मिक युध्द में संलग्न हो जाएं। (इफि0 6:10-18)

रूत: (संबंधित बातें: महिला अगुवा, महिला का आदर हुआ)

पुराना नियम: परमेश्वर ने महिलाओं जैसे रूत, दबोरा व एस्तर आदि को अपनी सेवा के योग्य बनाया।

- दबोरा ने इस्राएल को स्वतन्त्र कराने में सेना का नेतृत्व किया। (न्यायियों 4-5 अध्याय) इसके साथ ही रूत व एस्तर नामक पुस्तकें भी पढ़ें।

नया नियमः नये नियम में भी परमेश्वर ने स्त्रियों को अपनी सेवा योग्य बनाया।

- मरियम ने परमेश्वर की दासी बनना स्वीकार किया और प्रभावशाली स्तुति गीत गाया। (लूका 1:22-56)
- प्रिस्किल्ला ने अपने पति के साथ तम्बू बनाए और कुछ नई कलीसियाएं स्थापित करने में सहायता की, वह अपुल्लोस को सही मसीही शिक्षा देने में भी सहायक रही। (प्रेरितों के काम अध्याय 18)
- दोरकास ने निर्धनों के लिये वस्त्र बनाए। (प्रेरितों के काम 9:36-43)।

हमारा प्रत्युत्तर :

- महिलाओं का आदर करना व गुणवान स्त्रियों की प्रसंशा करना चाहिये।(नीतिवचन 31:10-31, इफि0 5:21-33)
- जिस सेवा का एक मसीही स्त्री को वरदान मिला हो, उसी के लिये उसे प्रोत्साहित करना चाहिये। (जैसे फिलिप्पुस की पुत्रियां, प्रेरितों के काम 21:8-9)।

पलिश्तियों द्वारा महापवित्र वाचा का संदूक छीन लिया जानाः (संबंधित बातेंः दंड, पीड़ा, वाचा का संदूक, स्तीफनुस, सताव, शहीद होना)

पुराना नियमः परमेश्वर अपने अनाज्ञाकारी लोगों की ताड़ना के लिये दुष्ट लोगों का प्रयोग करता है, तथा धर्मी लोगों की भलाई के लिये उन पर दुःख आने देता है।

- न्यायियों की पुस्तक में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि किस प्रकार जब जब उसके लोग मूर्तिपूजा व अन्य पापों में पड़े तो विजातियों के अधीन होकर अन्धेर सहा, और जब उन्होंने पश्चाताप किया तो परमेश्वर ने एक छुड़ाने वाले को भेजकर शान्ति दी। वे फिर पाप करते थे, तो फिर किसी शासक के अधीन होकर दुःख सहते थे, यही क्रम बार बार चलता था। परमेश्वर उनकी ताड़ना के लिये दुष्टों का प्रयोग करता था।
- शिमशोन को उसकी दुर्बलताओं के होते हुए भी परमेश्वर ने मूर्तिपूजक पलिश्तियों से इस्राएल को छुड़ाने में उसे प्रयोग किया। (न्यायियों अध्याय 14-16)
- पलिश्तियों ने वाचा के संदूक को छीनकर अपने देवता दागोन के मंदिर में रख दिया। तीसरे दिन दागोन देवता का सिर कटा हुआ मिला, जैसे कि शैतान के मृत्युलोक में कैदियों को छुड़ाने के लिये यीशु के प्रवेश करने व तीसरे दिन जी उठने पर, शैतान का सिर कट गया है। जिन गाय को कोई हांक नहीं रहा था, उन गायों द्वारा वाचा के संदूक को इस्राएल देश में पहुंचता हुआ देखा गया। जैसे विजयी यीशु अपनी मृत्यु, पुनरूत्थान व स्वर्गारोहण के पश्चात अपने शिष्यों पर प्रकट हुआ था, वे गायें भी प्रकट हुई। (1 शमुएल 4-6)
- अय्युब एक धर्मी पुरूष था तो भी उसने महासंकट सहा, उसने परमेश्वर से विभिन्न प्रश्न किए पर उसके विरूद्ध नहीं बोला। (अयुब 1-42)। (यह एक विस्तृत कहानी है इसे विभिन्न भागों में सिखाने व इसका सारांश बताने की आवश्यकता है)। इस पुस्तक के मुख्य अध्याय 1-4 तथा 40-42

नया नियमः अभी परमेश्वर हमें दुख सहने देता है ताकि हम बाद में उसकी महिमा में हिस्सेदार बन सकें। परमेश्वर उन्हें दंड देता है जो उसके लोगों पर अंधेर करते हैं।

- राजा हेरोदेस ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर कटवाया, याकूब व अन्यों को मरवा डाला किन्तु बाद में कीड़े उसके शरीर में पड़े व कष्टकारी मृत्यु से मरा। (प्रेरि 12)
- येरूशलेम में विरोधी यहूदियों ने स्तीफनुस को पत्थरवाह करके मार डाला, तथा अन्य मसीहीयों को सताया परिणामस्वरूप वे तितर-बितर हुए और सुसमाचार सुनाते फिरे जिससे अनेकों को आशीष मिली। (प्ररि 7-8)

- पौलुस और सिलास पीटे व पत्थरवाह किए गये, लूटे गये, जहाज टूटा। (2 कुरि0 11:22-23, प्रेरि 27-28)।

हमारा प्रत्युत्तर: जब हम पर दुख आए तो आनन्दित हों क्योंकि स्वर्ग में हमारा महिमापूर्ण प्रतिफल है।(1 पतरस 4:12-19)।

- हम इसलिये संसार में दु:ख उठाते हैं क्योंकि संसार यीशु से घृणा करता है, इसलिये हमसे भी उसे घृणा है। परन्तु हमें इसका प्रतिफल मिलेगा। (यूहन्ना 15:18-27, रोमियों 8:17-39)।
- जो क्रूस यीशु हमें देते हैं उसे उठाना चाहिये। (लूका 9:22-26)।

इस्राएल के राजाओं के युग की घटनाएं तथा बाद की समान घटनाएं

परमेश्वर ने इस्राएली अगुवों को तैयार किया (संबंधित विषय: शमूएल, हन्ना, एली, राजा शाऊल,यशायाह, प्रेरितों की तैयारी)।

पुराना नियम: पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ताओं व अगुवों जैसे मूसा, युसुफ, दानिएल आदि को विभिन्न प्रकार से प्रशिक्षण दिया व तैयार किया:

- मूसा ने अपने लोगों की सेवा के लिये मिस्र का राजपाठ त्याग दिया। (इब्रानियों 11:24-28)
- हन्ना ने अपने पुत्र शमूएल को परमेश्वर की सेवा के लिये एली को सौंप दिया, जहां शमूएल को एली के विषय में चौंका देने वाला परमेश्वर का संदेश प्राप्त हुआ। (1 शमूएल 1-3)
- इस्राएली लोगों ने शमूएल से आग्रह किया कि उनके ऊपर राजा नियुक्त किया जाए, उसने चेतावनी दी कि परिणाम बुरा होगा, किन्तु जब उन्होंने हठ न छोड़ा तो उसने शाऊल नामक एक शूरवीर का अभिषेक उन्हीं की इच्छानुसार उनके आनन्द के लिये कर दिया। (1 शमुएल 8-9 अध्याय)।
- शाऊल कुशलतापूर्वक शासन करता रहा, अनेक इस्राएली शत्रुओं को उसने परास्त किया, पर एक समय उसने घोर अपराध कर दिया। (1 शमूएल 11-15 अध्याय)
- मूसा की भांति दाऊद एक कुशल चरवाहा था, बचपन ही से अपने पिता यिशै की भेड़-बकरियां चराते हुए उसे अच्छा अनुभव प्राप्त था। (1 शमूएल 16, 17:33-37)
- गोलियत को मार वह प्रसियोध्दा बन चुका था जिसके कारण शाऊल उससे ईर्ष्या रखने लगा, और छिपकर मारा-मारा घूमने लगा। इससे उसे परमेश्वर पर भरोसा करना सीखा जैसा अनेक भजनों से प्रकट है। (1 शमूएल 18-31 अध्याय)। इन अध्यायों में युध्द संबंधी अनेकों बातें पाई जाती हैं।
- यशायाह ने मंदिर में परमेश्वर की पवित्रता का अदभुद दर्शन देख अपनी अशुद्धता पहचानी और भूमि पर गिर पड़ा। (यशायाह अध्याय 6)
- यिर्मयाह ने अनेकों कष्ट उठाए, गढ़हे में भी रहा, तब उसने इस्राएल के पतन की भविष्यवाणी की।(यिर्म 38)

नया नियम: नये नियम में परमेश्वर ने अगुवों को तैयार किया:

- पतरस व अन्य प्रारम्भिक प्रेरित अपने गुरू यीशु के साथ तीन वर्ष रहे। (मरकुस 3:13-19)
- पौलुस ने अपनी प्रेरितिक सेवकाई आरम्भ करने से पूर्व कुछ समय अरब में बिताए, और अनेक कष्ट भी सहे।(गलतियों 1:11-24)।

हमारा प्रत्युत्तर: अनेक त्याग करते हुए हम प्रभु की सेवा की अच्छी तैयारी करते हैं:

- इस तैयारी में बाइबल अध्ययन के साथ अपने परिवार, मित्रों व दूसरों को वचन की शिक्षा देते हैं, और नये अगुवों की सहायता भी करते हैं। (2 तीमुथियुस 2:2)

परमेश्वर का भय मानने वाले इस्राएली राजा: (संबंधित बातें: दाऊद का कुशल शासन, सुलैमान, आज्ञापालन, शिबा की रानी, इस्राएल के अच्छे राजा, बुजुर्ग)

पुराना नियम: जब इस्रायली लोगों ने मूर्तिपूजा व घृणित कार्य किए तो परमेश्वर ने बुरे राजा नियुक्त किए, और जब लोगों ने उसकी आज्ञा मानी और मूर्तिपूजा से दूर रहे तो उन पर दाऊद व सुलैमान जैसे अच्छे अगुवे रहे। अधिकांशत: दुष्ट राजाओं ने ही उन पर शासन किया:

- सुलैमान ने शासन आरम्भ करने से पहले बाबेल के लिये प्रार्थना की। उसके बाबेल मत्तापूर्ण निर्णयों ने दूर दूर तक उसकी ख्याति पहुंचा दी। (1 राजा 3, 4:21-34)
- सुलैमान ने भव्य मंदिर बनवाया तथा वाचा का संदूक धूमधाम के साथ वहां रखा गया। (1 राजा 8 अध्याय)
- शीबा की रानी उसका वैभव देखने आई और आश्चर्यचकित हुई। (1 राजा 10:1-13)
- सुलैमान के शासनकाल में लोगों ने बड़ा आनन्द मनाया। (1 राजा 10:22-29)
- यहोशापात ने मूर्तियां तुड़वाई तथा परमेश्वर की व्यवस्था सिखाई। (2 इतिहास 17-18 अध्याय)
- बालक येशिय्याह राजा ने सलाहकारों की सुनी और इस्राएल में आत्मिक जागृति लाया। (2 राजा 22-23)
- उज्जियाह व आसा की भांति हिज्जिकियाह यहूदा में सम्पन्नता लाया। (2 इतिहास 29-32)

नया नियम: जब लोग पवित्रात्मा की अगुवाई में चलते और पवित्रशास्त्र का पालन करते हैं तो परमेश्वर अपनी कलीसिया में सेवकाई के लिये योग्य सेवक देता है:

- पौलुस अपने सहकर्मी तीतुस को क्रेते में नई कलीसियाओं की देखभाल के लिये योग्य बुजुर्ग नियुक्त करने का परामर्श देता है। (तीतुस 1:5-9)।

इस्राएल के भविष्यवक्ता: (संबंधित बातें: चेतावनी, एलिय्याह, आहाब, बाल, पश्चाताप, झूठे अगुवे)

पुराना नियम: परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ता चेतावनी देने के लिये भेजे ताकि बुरे राजा व अन्य लोग बुरे मार्गो को त्याग दें व पश्चात्राप करें।

- सुलैमान राजा के मूर्ख पुत्र रहूबियाम के आम जनता के भारी करों को हलका न करने के निर्णय ने इस्राएल दो भागों में बांट दिया। उत्तरी राज्य इस्राएल तथा दक्षिणी राज्य यहूदा कहलाया। (1 राजा 12 अध्याय)
- उत्तरी राज्य के प्रथम शासक यरोबाम ने मूर्तिपूजा आरम्भ कराई, चेतावनियों को न माना। (1 राजा 13)
- अनेकों राजाओं ने यारोबाम के बुरे आचरण का अनुसरण किया। आहाब राजा ने संपूर्ण इस्राएल से मूर्तिपूजा कराई परन्तु एलिय्याह ने आश्चर्यकर्म करके सिध्द कर दिया कि यहोवा ही जीवित परमेश्वर है और मूर्तियां कुछ नहीं हैं, एलिय्याह ने विधवा के पुत्र को चंगाई दी। (1 राजा 17)
- एलिय्याह बाल के पुजारियों तथा आहाब राजा को प्रतियोगिता के लिये कर्मेल पर्वत पर आने की चुनौती देता है। (1 राजा 18 अध्याय)

एलिय्याह यह सोचकर निराश होता है कि वह अकेला है, पर परमेश्वर का दूत उसे संभालता है। (1 राजा 19)

एलिय्याह ने सबसे अधिक दुष्ट राजा आहाब को पश्चात्ताप करने के लिये कायल किया। (1 राजा 21 अध्याय)

आहाब ने मीकायाह नबी की भविष्यवाणी का तिरस्कार किया और अपने ऊपर मृत्यु लाया। (1 राजा 22 अध्याय)

एलिय्याह दुष्ट राजा अहज्याह के संदेशवाहकों को स्वर्ग की अग्नि से भस्म करता है।(2 राजा अध्याय 1)

एलिय्याह का अग्नि-रथ द्वारा स्वर्गारोहण और उसके सेवक एलीशा पर उसकी आत्मा उतरना। (2 रा0 अध्याय 2)

एलीशा अदभुद रीति से इस्राएल के राजा यहोराम को मोआब पर विजय दिलाता है। (2 राजा अध्याय 3)

एलीशा परमेश्वर की सामर्थ से विधवा को कर्जा चुकाने योग्य बनाता है। (2 राजा अध्याय 4)

एलीशा परमेश्वर की सामर्थ से नामान कोढ़ी को उसके कोढ़ से चंगा करता है। (2 राजा अध्याय 5)

एलीशा परमेश्वर की सामर्थ से आरामी सेना का आक्रमण विफल करता है। (2 राजा 7:24-32, अध्याय 8)

- यिर्मयाह येरूशलेम के पतन व दंड की भविष्यवाणी करता है, पर राजा ध्यान नहीं देता। (2 इतिहास 36:11-23, यिर्मयाह 36)
- राजा व प्रजा दोनों और अधिक बुराई करते हैं और अंत में बाबेल के दासत्व में जाते हैं। (2 इतिहास 36)
- पहला मिशनरी योना दूसरे देश भेजा जाता है, वह आज्ञाउल्लंघन करता है, पर जब परमेश्वर उसे सिखाता है तो जाने को तैयार होता है। (योना की पुस्तक)।

नया नियम: यीशु ने सब लोगों को बुरे मार्गो से मन-फिराने की आज्ञा दी, और बुरे अगुवों से जो भेड़ियों के समान होते हैं और परमेश्वर के लोगों को भटका देते हैं, सावधान रहने की चेतावनी दी :

- एक पापी के मन फिराने से स्वर्ग में बड़ा आनन्द मनाया जाता है, इसे खोई हुई भेड़ के दुष्टान्त द्वारा यीशु ने समझाया। (लूका 15:1-10)
- जिस अनुग्रह के द्वारा मनुष्य मन-फिराता है, यीशु ने उसे उड़ाऊ पुत्र के दुष्टांन्त द्वारा समझाया।(लूका 15:11-32)।
- पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने सुसमाचार प्रचार कर बड़ी भीड़ से पश्चाताप करने का अव्हान किया।(प्रेरि 2:1-41)
- यीशु ने सब्त के दिन एक अन्धे को आंखें दीं, कपटी धार्मिक अगुवे क्रोधित हुए क्योंकि सब्त के दिन उन्होंने यह कार्य किया था। (यूहन्ना 9 अध्याय)।
- तरसुस का शाऊल मसीहीयों को जेलखाने में डलवाता व उन्हें मृत्युदंड दिलवाता था, किन्तु उसने मन-परिवर्तन किया और शाऊल से संत पौलुस बन गया। (प्रेरितों के काम 9:1-31)
- यीशु ने कहा, झूठे भविष्यवक्ताओं से सावधान रहो जो भेड़ों के भेष में आते हैं परन्तु हृदय में भेड़िए होते हैं। (मत्ती 7:15-20)।
- यूहन्ना बपतिस्मादाता ने हेरोदेस को उसके व्यभिचार के विषय उलाहना दी, उसने उसे जेल में डाल दिया और अन्त में उसका सिर कटवा दिया। (मत्ती 14 अध्याय)।
- यीशु ने फरीसियों के कपट रूपी खमीर से(अर्थात् उनकी खोखली आत्म-धार्मिकता और मानवीय विधियां) चौकस रहने के लिये कहा।(मत्ती 15:1-20, लूका 12:1)
- पौलुस ने इफिसुस के अगुवों को भेड़ियों से सावधान रहने को कहा जो झुण्ड को न छोड़ेंगे। (प्रेरि 20:28-32)
- यूहन्ना की भविष्यवाणी में परमेश्वर ने ख्रीस्त-विरोधी द्वारा विश्वासियों पर घोर अत्याचार से सावधान किया। (प्रकाशितवाक्य अध्याय 13)
- यूहन्ना के दर्शन भयानक न्याय की चेतावनी देते हैं जो पश्चात्ताप न करने वालों पर आएगा। (प्रका0 16-18)
- किन्तु ये दर्शन महिमापूर्ण प्रीति-भोज की भी प्रतिज्ञा करते हैं जो पश्चात्ताप करने वालों के लिए होगा।(प्रका0 19)
- यूहन्ना के दर्शन परमेश्वर के विशाल सिंहासन के संमुख अंतिम न्याय की घोषणा करते हैं। (प्रका0 20)
- यूहन्ना के दर्शन नये आकाश और नई पृथ्वी का भी प्रकाशन करते हैं जहां विश्वासी रहेंगे और मसीह के साथ राज्य करेंगे, वहां न रोना, न दांतों का पीसना होगा। (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21-22)

हमारा प्रत्युत्तर:

- अपने झुण्ड की चौकसी करो जिसकी जिम्मेदारी परमेश्वर ने हमें दी है। हमें परिवार ही से यह कार्य आरम्भ करना चाहिये। (प्रेरितों के काम 20:28-32)

- ऐसे अगुवों को नियुक्त करना चाहिये जो उत्तरदायी, परिपक्व व परखे हुए हों। (1 तीमुथियुस अध्याय 3)
- जो लोग फूट उत्पन्न करते हैं उन्हें दूर कीजिये। (तीतुस 3:10–11)
- हमारी कलीसियाओं को अपनी सामान्य त्रुटियों को त्यागना चाहिये जो कलीसिया को दुर्बल करती हैं। (प्रका 2–3)
- पवित्रात्मा द्वारा प्रतिदिन नये बनते जाएं। (2 कुरिन्थियों 4:16–18)
- जो विश्वासी सुसमाचार के लिये दु:ख उठा रहे हैं उन्हें अनन्त प्रतिफल का आश्वासन दीजिये। (1 पतरस 1:6–9, 1 यूहन्ना 3:1–3)

लूसीफर: (संबंधित बातें: शैतान का स्वर्ग से गिराया जाना, आत्मिक युध्द, शैतान द्वारा यीशु की परीक्षा, शैतान)

पुराना नियम : लूसीफर अर्थात् 'बेबीलोन का सम्राट' एक अति सुन्दर स्वर्गदूत था, जो अपने घमण्ड के कारण स्वर्ग से नीचे गिरा दिया गया और शैतान, हमारा शत्रु बन गया (देखें यशायाह 14:3–17)। यह घटना सृष्टि निर्माण से पूर्व घटी किन्तु इसका घटना का प्रकाशन इस्राएल राज्य के बंटवारे के काल तक नहीं हुआ था।

नया नियम: शैतान निरंतर परमेश्वर की सन्तानों से युध्द करता है:

- स्वर्ग में युध्द करते हुए वह तथा उसके पतित स्वर्गदूत–साथी नीचे गिरा दिये गये।(प्रकाशितवाक्य 17:7–9)
- शैतान द्वारा यीशु की परीक्षा किया जाना – (मत्ती अध्याय 4)
- यीशु ने सावधान किया कि शैतान चिड़ियों के समान हृदय से वचन रूपी बीज चुग ले जाता है। (मत्ती 13 अध्याय)
- यीशु को पकड़वाने के लिये शैतान ने यहूदा को उभारा। (यूहन्ना 13:21–30, 18:1–12)
- शैतान ने विश्वासी हनन्याह-सफीरा को भी पाप करने के लिये उभारा। (प्रेरितों के काम 5:1–11)

हमारा प्रत्युतर:

- शैतान का सामना करो तो वह हमारे पास से भाग जाएगा (याकूब 4:7)
- शैतान से सावधान रहना चाहिये क्योंकि वह गरजनेवाने सिंह के समान ताक में रहता है कि किसे फाड़ खाए।(1 पतरस 5:8–9)।

बाबेल की बन्धुआई की घटनाएं तथा बचे हुओं की वापसी, एवं बाद की अन्य घटनाएं

इस्राएल की बाबेल की बन्धुआई: (संबंधित बातें: मोर्दकै, दानिएल, विश्वासियों की सुरक्षा, अच्छा चरवाहा यीशु)

पुराना नियम: बन्धुआई के मध्य परमेश्वर ने उन बचे हुए लोगों की सुरक्षा की जो नित्य केवल उसी की आराधना करते थे :

- मोर्दकै ने अपनी भतीजी एस्तर की जो एक साहसी रानी थी, परमेश्वर के शत्रुओं का नाश करने की योजना बनाने में सहायता की ।(एस्तर की पूरी पुस्तक)
- परमेश्वर ने दानिएल के तीन मित्रों की आग के भटटे में रक्षा की (दानिएल अध्याय 3) तथा दानिएल की रक्षा शेरों की मांद में कीं। (दानिएल अध्याय 6)।

नया नियम: यीशु जो अच्छा चरवाहा है, अपनी भेड़ों अर्थात् अपने अनुयायियों की अनन्त काल तक रक्षा करने की प्रतिज्ञा करता है। (यूहन्ना 10:7–39)।

हमारा प्रत्युत्तर: परमेश्वर के अपरिमित अनुग्रह में भरोसा रखें कि वह अपनी सन्तानों की अनन्तकाल तक रक्षा करेगा। (रोमियों 8:28–39)।

धर्म-सुधारक एज्रा (संबंधित बातें: पुनर्निर्माण, बाबेल की बन्धुआई से लौटना, नहेम्याह, आत्मिक वरदान)

पुराना नियम: परमेश्वर ऐसे विश्वासयोग्य अगुवों का प्रबन्ध करता है जो उसके लोगों का पुनर्निर्माण करके उन्हें संगठित करके उन्हें उसकी सेवा के योग्य बना सकें:

- फारस के राजा कुस्रू ने बाबेल के बन्धुओं को स्वदेश लौटने की अनुमति दे दी ताकि वे अपने देश इस्राएल व अपने मंदिर का पुनर्निर्माण कर सकें। (एज्रा अध्याय 1)
- स्वदेश लौटने वाले यहूदी बड़े आनन्द व आंसुओ के साथ मंदिर पुन: बनाना आरम्भ करते हैं। (एज्रा 3)
- नहेम्याह राजा अर्यक्षेत्र से येरूशलेम की टूटी शहरपनाह को फिर बनाने की आज्ञा लेता है, और उजाड़ पड़े देश का सर्वेक्षण करता है। (नहेम्याह अध्याय 1 व 2)
- बहुत विरोधों के होते हुए भी नहेम्याह येरूशलेम की टूटी दीवारें पुन: बनाने में हथियारबन्द मज़दूरों की अगुवाई करता है। (नहेम्याह अध्याय 3 व 4)
- राष्ट्रीय जागृति के अवसर पर लोग परमेश्वर का वचन सुनते हैं, उस पर ध्यान देते हैं व पश्चाताप करते हैं। (नहेम्याह अध्याय 8 व 9)

नया नियम: परमेश्वर ने हमें अपने पवित्रात्मा द्वारा वरदान तथा सामर्थ दी है कि हम अगुवाई कर सकें, एक दूसरे की सेवा कर सकें और आवश्यकताग्रस्त लोगों की सहायता कर सकें :

- पश्चात्तापी लोगों के साथ यीशु ने खाया-पिया जिसके द्वारा उन पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ। मरकुस 2:13-17।
- हम कलीसिया में परस्पर अपने आत्मिक वरदानों द्वारा एक दूसरे की प्रेम से सेवा करते हैं। 1 कुरि012:14-31
- पौलुस ने अपने साथियों को आज्ञा दी कि वे दूसरों को सिखाएं व ऐसे सेवक नियुक्त करें जो अन्य दूसरों को सिखाएं, और सिखाने का यह क्रम उन्नति करता जाए। (तीतुस 1:5, 2 तीमुथियुस 2:2)।

हमारा प्रत्युत्तर: विश्वास से प्रभु की सेवा के लिये लोगों को प्रोत्साहित करने की योजना बनाएं। (इफि0 4:11-16)

- नये सेवकों को ऐसे स्थानों पर भेजें जहां उनकी अत्याधिक आवश्यकता हो। (प्रेरि0 13:1-3, तीतुस 1:5)।

यीशु के जीवनकाल की घटनाएं

यीशु का जीवन: (संबंधित बातें: प्रेरितों का चुना जाना, विजयी प्रवेश, क्रूसीकरण, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण)

- यीशु का जन्म : मत्ती 1-2 अध्याय, लूका 2 अध्याय।
- यीशु का बपतिस्मा : मत्ती अध्याय 3
- शैतान द्वारा यीशु की परीक्षा लिया जाना : मत्ती अध्याय 4
- यीशु का 12 चेले चुनना, जो बाद में प्रेरित कहलाए :मत्ती 4:18-21, 9:9-13, यूहन्ना 1:35-51,मरकुस 3:13-19
- यीशु का रूपान्तर : मत्ती 17 अध्याय
- यीशु का येरूशलेम में विजयी प्रवेश (खजूरों का इतवार) : मत्ती 21 अध्याय
- यीशु की महान आज्ञा, सब जातियों को चेले बनाओ, मन-फिराने व क्षमा पाने का पवित्रात्मा की सामर्थ में प्रचार करना : मत्ती 28:18-20, मरकुस 16:15-16, लूका 24:46-48, यूहन्ना 20:21-23, पेरि0 1:8
- यीशु का स्वर्गारोहण : लूका 24:50-53

यीशु के महिमापूर्ण स्वर्गारोहण के समय की घटनाएं

पिन्तेकुस्त के दिन पवित्रात्मा उतरा: (संबंधित बातें: स्तिफनुस, पिन्तेकुस्त, कलीसिया की सभा, मिशनरी दल, न्याय)

- पिन्तेकुस्त के दिन यहूदी विश्वासियों पर पवित्रात्मा उतरा : (प्रेरि0 2)
- ख्रीस्त के शत्रु स्तिफनुस को पत्थरवाह करके उस समय मार डालते हैं जब उसने पुराने नियम के इतिहास से बताया कि उनके पूर्वजों ने किस प्रकार हमेशा परमेश्वर का विरोध किया और नबियों का घात किया है, और अब यीशु को मार डालने के दोषी हैं। (प्रेरितों के काम अध्याय 7)
- प्रथम अन्यजाति कलीसिया : अन्यजाति नये विश्वासियों ने भी पवित्रात्मा पाया। (प्रेरितों के काम अध्याय 10)
- प्रथम मिशनरी दल। (प्रेरितों के काम अध्याय 13-14)
- प्रथम अन्तर-कलीसियाई सभा: (प्रेरितों के काम अध्याय 15)
- अंतिम न्याय: (प्रकाशितवाक्य 20:11-15)
- यीशु ने प्रभु-भोज की स्थापना की । (मत्ती 26:17-29)
- गेतसमनी बाग में यीशु का दुख व उनका पकड़वाया जाना : (मत्ती 26:36-56)
- यीशु का कुछ रोमी शासकों के सामने न्याय किया जाना: (मरकुस 14:55-64, यूहन्ना 18:28-40, 19:1-16)
- यीशु का क्रूसीकरण : (मत्ती 27, मरकुस 15, लूका 23, यूहन्ना 19:17-37)
- यीशु का गाढ़ा जाना : (यूहन्ना 19:38-42)
- यीशु का पुनरूथान और प्रकट होना : (मत्ती 28, यहन्ना 20-21)